शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.III, pp (987-991) July - Sep. 2019

जैनेन्द्र के कथा साहित्य में नारी चिन्तन के शाश्वत मूल्य

आशीष यादव
शोध छात्र, हिन्दी विभाग
एम.एल.बी. महाविद्यालय, ग्वालियर
सम्बद्ध : जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
Email ::ashishup264@gmail.com

सारांश

"जैनेन्द्र ने नारी को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए उसके स्वरुप को राजनीति, समाज, परिवार आदि विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में विभिन्न रुपों में देखा है। जैनेन्द्र पर यह आपेक्ष किया जाता है कि उनके नारी पात्र अत्यन्त सोचनीय हैं। उनमें भारतीय संस्कृति और मर्यादा की चेतना नहीं है, किन्तु सत्यता यह है कि जैनेन्द्र के पात्र अतीत का स्पर्श करते हुए भी वर्तमान में जीते हैं। अपनी संस्कृति की कभी वे उपेक्षा नहीं करते हैं। भौतिकता के युग में स्त्री पुरुष से आगे बढ़ने के लिए तत्पर है। स्त्री पुरुष में होड़ लगी हुई है, किन्तु जैनेन्द्र के अनुसार स्त्री की पुरुष से प्रतिस्पर्धा उचित नहीं है। 'त्यागपत्र', 'परख' आदि में जीवन का जो आदर्ष व्यक्त हुआ है, वह सामाजिक मर्यादा के पोषक मूल्य ही हैं।"

प्रस्तावना

"जैनेन्द्र जी ऐसे पहले संपूर्ण कथाकार हैं, जिन्होंने हिन्दी कथा साहित्य में नारियों को पुरूषों के मुकाबले अधिक अर्थपूर्ण बनाया और भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री विरोधी प्रवृत्तियों का गहन विश्लेषण भी किया। वे कहते हैं, कि मेरा लेखन गढन्त है। पात्र उससे बाहर नहीं हैं, मुझमें से सृष्ट हुये हैं। कठपुतली जैसे लगते हो तो त्रुटि इस अर्थ में मेरी ही रही होगी, कि मेरे अन्दर की जान उनमें सही – सही फूकी और डाली नहीं जा सकी। चिन्तन सृजन पर हावी हो गया है, यह आवश्यक और सही तौर पर कहा जा सकता है। अगर उनकी समस्याओं का संवेदनात्मक संबंध नही बना दिखता है तो यह लेखन की क्षमता – अक्षमता का प्रश्न माना जाना चाहिए, लेकिन मैं समझ नहीं पाता हूँ कि वाह्य जगत से या समाज से उठाकर पात्र कैसे सजीव बनाये जा सकते हैं। क्योंकि जीवन उनमें पड़ेगा तो बाहर के संसार, समाज में से खीचकर तो हम जीवन को उनमें डाल नहीं सकेंगे वह चीज तो अंत में अपने प्राणों के उत्सर्ग में से ही पात्रों में उतारी जा सकेगी।"[1]

"पीड़ा तो पीड़ा है उसे सहने की ताकत स्त्री पुरुष दोनों में से एक को अधिक है। वह सहती रहती है, अहसास भी करती है, पुरुष दोनों के अन्तर में मूक बना रहता है।"[2]

मनुष्य एक विचारशील प्राणी है। पीड़ा के प्रति जिज्ञासा इतनी गहरी होती है कि उस

विषय में चिन्तन का स्वरुप उथल–पुथल से भरा रहता है। अन्यथा हम अपनी जिन्दगी में देखते और झेलते हैं, स्त्री इस अन्याय के अधिकांश घूँट पी लेती है। रचनाकार की नारी के प्रति पीड़ा मोहवश ही है।

जैनेन्द्र जी अपने कथा साहित्य में चरित्रों से अद्‌भुत रिश्ता रखते है, यह रिष्ता निकट का है, दूरी का भी है। सहानुभूति हर हालत में है पर पात्र का सम्बन्ध क्या है? इसका ख्याल आते ही स्त्री पुरुष सम्बन्ध की बात गहन रुप से जुड़ जाती है। सुनीता, कल्याणी, मृणाल, कट्‌टो, सुखदा, इला रंजना के साथ, सत्यधन, प्रमोद, जयवर्धन प्रतिनिधि पात्र हैं, नारी के मन की बात को टटोलने के पारखी जैनेन्द्र जवानी बोलते हुए लिखते है तब ऐसा लगता है, कि उनके मन का आत्मचिंतन अन्तः साक्ष्य में परिवर्तित हो गया है, कथा साहित्य में इसका अद्वितीय संगम है।

मृणाल और प्रमोद की बातचीत में गजब का मोह है जो बन्धन ना होते हुए भी बन्धन है। कट्‌टो – सत्यधन बिहारी कट्‌टो, सुनीता के हरि प्रसन्न सुनीता के बीच की बातचीत सहज है। यथार्थ से जुड़े कई प्रश्न हैं, जो कथाक्रम में सहज ढंग से आ गये।

"निरा बुध्दिवाद" निबंध जैनेन्द्र जी का हंस में छपा था, यह पहला निबंध था, यह लेख जयशंकर प्रसाद एवं मैथिलीशरण गुप्त को बहुत भा गया था, उनका मानना था सकारात्मक चिंतन (आब्जेक्टिव थिंकिंग) ही यथार्थ होता है, किन्तु यह भी सत्य है, कि विषय (सब्जेक्ट) में भी वस्तुनिष्ठ चिंतन चलता है।"[3] सापेक्षता के प्रश्न से जुड़े कई सवाल जैनेन्द्र जी ने अपने कथा साहित्य में समेटे हैं। यही कारण है कि यथार्थ से दूर हटते जाने में से उनकी शक्ति बढ़ गई है। कोई यथार्थ पात्र क्या मिथ्या बन सकता है? उसमें इतनी शारीरिक या सामाजिक या तात्कालिक वास्तविकता रहती है, कि उसी कारण उसकी सम्भावनाएँ सीमित रह जाती हैं अर्थात दैहिक व्यापार जितना सुनिश्चित रुप में पात्र के साथ ज्वलित रहेगा, तो यह हो सकता है।

जीवन है तो कठिनाई है, कठिनाई का क्या अर्थ है, उस सन्दर्भ में सामान्यतया लोगों की जिस रुप में अवधारणा है, उसमें चलते, फिरते, देखते में जो कष्ट है, उसी रुप में उसे कठिनाई को मान्य लिया जाता है। जैनेन्द्र ने इस कठिनाई को पात्रों की छटपटाहट में देखा, जो जीवन जगत के मध्य एक सौजन्य पूर्ण दृष्टि है। अंग्रेजी शब्द कॉमनसेन्स का प्रश्न है, तब लगता है, कामनप्लेस, कामनलेस निश्चय ही व्यक्ति के चरित्र निर्माण की अजीब भूमिका है यह समझने की ग्रोथ का प्रश्न भी है, जैनेन्द्र ने हर ग्रोथ (बढ़ने) के आकार प्रकार को पात्रों में देखा जो नियति के साथ नियति के मध्य है।

धार्मिक कथाओं, पुराणों के पात्र में तनिक वास्तविकता तो है, क्योंकि हम उसका आचरण शीर्ष से करते आ रहे है तभी तो पाप पुण्य की कल्पना मनुष्य जीवन का एक अंग बन गई।

"दुख सबको माजता है" प्रभात त्रिपाठी से लिखा, जैनेन्द्र की रचना के साथ हुए संवाद का अर्थ निश्चित रुप में भिन्न और गहरा है।"[4] पात्रों के साथ जब लेखक भाव भाषा बाधने का प्रयत्न करता है, उसमें उसकी सोच में चौकसी अवश्य होती है। बहुत साधारण सी कही गयी बात में रक्त मांस की गहरी अनुभूति अवश्य होती है। बुआ मृणाल भतीजे प्रमोद की कहानी सहज

नहीं है। उसमें रक्त संबंध की आत्मीय स्थिति है, जिसका वैज्ञानिक सोच मानवीय रक्त संबंध है, कल्पना का प्रश्न है, ही नहीं, क्योंकि जो कुछ घट रहा है वह आज भी घट रहा है। भतीजे से बुआ ने कहा था कि वह चिड़िया बनना चाहती है, लेकिन बनाती है पत्नी फिर परित्यक्ता, फिर न जाने क्या बनने की चाह में, घटना की स्थिति भी नियति से जुड़ गई। इसे सहजता में स्वीकार किया जा सकता है। मनुष्य की पूरी सभ्यता को एक क्षण में देखा जा सकता है। "दर असल मृणाल और प्रमोद दोनों ही की व्यथा का कारण उस दुनिया से बाहर आने का जोखिम उठाना है, जहॉ रास्ता बना बनाया है, और खुद को खोजने की जरुरत नहीं। जिज्ञासा जहॉ शान्त है, और प्रश्न अवज्ञा का द्योतक है।"[5]

मृणाल एक स्त्री होकर स्वयं टूटना पसन्द करती है, पर टूटने के बाद भी समाज की मंगलाकांक्षा करती है, इसमे लाभ हानि या कायरता का प्रश्न नहीं, पर मनुष्य की क्षमा का महत्व है यह भारतीय संस्कृति भी है। 'क्षमा' शब्द अपने आप में पूर्णतः का द्योतक है। जैनेन्द्र की हर कथा में 'क्षमा' का रुप किसी न किसी रुप में अवश्य आया है, जो भौतिकवादी सत्य का आवरण है।

दुख सबको मॉजता है,
और चाहे वह सभी को,
मुक्ति देना न भी जाने,
किन्तु जिनको मॉजता है,
वह उन्हें यह सीख देता है,
कि सबको मुक्त रखे।"[6]

लेखक का 'विजन' पाठक के 'विजन' में अंतर है, यह अंतर आत्म विश्लेषण का है। नारी पात्रों में इतना खुलापन निश्चय है यथार्थ की स्थिति का आंकलन है। जैनेन्द्र जी ने उपन्यास कथा के पृष्ठ–पृष्ठ पर मनुष्य जीवन की कथा अंकित की है। मनुष्य जीवन के परिवेश में व्यथा कथा नारी की पुरुष से अधिक है। मनुष्य समाज की व्यथा कथा का संपूर्ण वृतान्त कथा ही है। परख की प्रस्तावना में ही जैनेन्द्र ने लिखा, "न भाषा का शिकंजा है, न भाव का। दोनों किसी कोड़ नियमों में बॅधकर नहीं रह सकते। जिसे बढ़ना है, वैसी कोई भी चीज शिकंजे में कसी नहीं रह सकती। शिकंजे में कस दोगे तो वह नहीं बढ़ेगी, लुंज रह जायेगी। हम उसी को सुन्दरता मानने लग जाये, तो बात दूसरी पर दुनिया की स्पर्धा और दौड़ में वह कहीं नहीं रह सकती।"[7]लेखक ने जिस बात को कहा है, उसमें मनोविज्ञान का तथ्य अधिक है। नारी के मन से जुड़े कई प्रश्न है, पूरे होते हुए भी अधूरे है। क्योंकि उसका जीवन बॅधा है।

उपन्यासकार एक व्यक्ति होता है, जो जन जीवन जीता है, उसके बीच जीवन की समस्यायें भी होती है उसे समझने के लिए रचनाकार को अपना धर्म निर्वाह करना पड़ता है, इससे जाहिर है कि व्यक्ति स्वयं एक पात्र होता है, अर्थात रचनाकार सभी पात्रों के साथ एक पात्र बनकर लिखता है, जो जीता है। जैनेन्द्र अपनी रचना के साथ यही तो न्याय करते हैं, कि जो बात उन्हें कहनी है या तो भूमिका बनाकर कह देते हैं, या पात्र के साथ रहकर कह देते हैं।

जैनेन्द्र की नारी शिक्षित होकर भी पुरातन की पक्षधर हैं, उनकी कथा में नारी के बहुआयाम हैं, जिसका दृष्टिकोण उनका अपना मनोविज्ञान है। मानवीय मर्यादा का ध्यान रचनाकार का अपना सहज गुण है, जिसके कारण भाशा के माध्यम से बात कह जाते हैं, उनका अपना अस्तित्व निरन्तर है।

नारी अगर परिवार समाज व्यवस्था की मर्यादा तोड़ती है, तो इससे समाज परिवार में उसकी अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न जरुर सामने है। घर की चार दीवारी में सुख–दुख की परिभाषा जितनी अच्छी तरह नारी जानती है, पुरुष नहीं, नारी के सामने सुख से अधिक दुख की अनुभूति में सुख ही है, जो कई प्रश्नों को जन्म देता है।

जैनेन्द्र ने अपने साहित्य में नारी को जिस रुप में प्रस्तुत किया, उसमें आजादी के साथ यौन पीड़ा से पीड़ित है। नारी पुरुष के पौरुषत्व न होने के कारण पूर्ण नहीं है, अर्थाभाव के कारण उसका जीवन पेट भरने के लिए दुखी है ऐसी स्थिति में उसका सोचा क्या होगा? यह सब कुछ परिस्थिति पर निर्भर है। आज भी नारी तनाव में जी रही है, कल भी तनाव में जियेगी, जीवन जीना तो, उसके लिए क्या करे यह एक जीवन जीने की व्यवहारिक समस्या है, उसका हल है, तो स्वीकार करे, या नहीं कई प्रश्न है। भौतिकवादी सुख में अर्थ पर जीवन जीने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। नारी विवाह को पवित्र मानती है, पुरुष क्यों नहीं मानता, जीवन के सात फेरे की गाठ से किसका कितना भला है, या नहीं। विवाह सम्बंध को प्रेम सम्बंध से जोड़ना भारतीय हिन्दू संस्कृति में जोड़ना कठिन है। क्योंकि भारतीय संस्कृतिक में विवाह के बाद पति–पत्नी का प्रेम श्रेष्ठ माना है।

नर, नारी क्रियाओं के प्रति सचेत है, पर ईमानदारी से मर्यादा की सामाजिक परिधि भी है, पति पत्नी के मध्य विवाद के कई कारण है, सच बोलना आज के जीवन में कठिन है, यदि सच बोला तो हालात जीवन जीने के बदल जाते हैं। शिक्षित होना, न होना दोनों के अर्थ जीवन जीने के अलग–अलग हैं, पर मनमुटाव का कारण कुछ और है, नारी नर का सहयोग कर रही है, कई एक जीवन के पहलू हैं, इन पर जैनेन्द्र के विचार मानवीय धरातल पर भौतिकवादी सुख के रुप में हैं।

जैनेन्द्र जी ने समय का उपयोग पूरी ईमानदारी से किया है, वे साहित्य के सच्चे तपस्वी हैं आत्मदृष्टि से इसी संसार में रहकर पूरे गृहस्थ के साथ सबको समेटे हुए। "उनकी कथा साहित्य यात्रा लोकहित के लिए बन गई, उनकी हर रचना मनुष्य के लिए है, यही उनके साहित्य का पुरुषार्थ है। अधिकारपूर्वक जिस बात को करते हैं, उसका कथ्य उनका अपने मध्य का ही है जो मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए स्वयं भाषायी माध्यम है। हिन्दी साहित्य कथ्य भाषा रुपी रसायन के बेजोड़मणि हैं।"[8]

नारी चिन्तन के चितेरे जैनेन्द्र जी का मुंशी प्रेमचंद के बाद हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। साथ में उपन्यास साहित्य जगत में उनका नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

जैनेन्द्र जी के कथा–साहित्य में नारी जीवन के सभी कोणों से चित्र खीचे गये हैं। उन्होंने नारी जीवन के हर पक्ष को अपनी लेखनी से चित्रित किया है। उन्होंने सामाजिक मूल्यों के

समानान्तर मानवीय सम्बन्धों के माध्यम से नये मानवीय आयाम की खोज की। यह खोज आदर्श की स्थापना की न होकर यथार्थ पक्ष की थी। जिसे मानवीय आत्मीय प्रेम की खोज कह सकते हैं।

हर रचनाकार अपने विचार लेखन रचना का स्रोत अपने भीतर की गहराई में कहीं न कहीं खोजता है, जो कभी अध्यात्मवाद है, वह सामाजिक चेतना का ही हिस्सा है, आधुनिक युग में जैनेन्द्र जैसे साहित्य मनीषी ने अपने चिन्तन से जो लिखा है, वह मूल्यवान है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *जैनेन्द्र कुमार संवाद,* पूर्वग्रह पृष्ठ – **10** अंक – 72
2. *पीड़ा तो पीड़ा है:* कविता डा0 रामकृष्ण गुप्त : पृष्ठ – **2**
3. *पूर्वग्रह* : जैनेन्द्र कुमार : पृष्ठ – **11**
4. *दुख सबको मॉजता है* – प्रभात त्रिपाठी – पृष्ठ – **36** पूर्वग्रह
5. *आत्म व्यथा में मिले जान की सीमा* : पुरषोत्तम अग्रवाल : पृष्ठ – **39** पूर्वग्रह
6. *दुख सबको मॉजता है :* प्रभात त्रिपाठी – पृष्ठ – **38** तदैव
7. *परख* : प्रस्तावना : जैनेन्द्र कुमार
8. *जैनेन्द्र कथा साहित्य* : डा0 रामकृष्ण गुप्त : पृष्ठ – **12**